षष्ठ अध्याय

'बूँद और समुद्र' उपन्यास की भाषा शैली

षष्ठम अध्याय

" बूँद और समुद्र " उपन्यास की भाषा-शैली ---

उपन्यास की भाषा उदात्त एवं गरिमामय हो ऐसा कोई आग्रह नहीं है। आमतौर पर उपन्यास की भाषा जन-जीवन की यथार्थ भाषा होती है। भाषा की दृष्टि से देखें तो महाकाव्य और उपन्यास में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि महाकाव्य का प्रभाव भाषा के कारण उपन्यास से अधिक पडता हैं। बल्की सच्चाई यह है कि उपन्यास का प्रभाव यथार्थवादी भाषा के कारण अधिक दिखाई देता है। डॉ.सुषमा प्रियदर्शिनी के कथनानुसार --

" उपन्यास ने जीवन के बहुमुखी यथार्थ के चिंतन के कारण अनेक काव्यरुपों को यथोचित रुप में आत्मसात कर लिया है और परिणामत: वह मिश्रकाव्य रुप बन गया है। यह उदार रुढिविरोधी निर्बधता महाकाव्य और उपन्यास की शैली में बडा अंतर उपस्थित करती है। शैलीगत प्रभाव की दृष्टि से महाकाव्य की अपेक्षा ` महत् ` का आभास उपन्यास शैली अधिक दे पाती हैं। उपन्यास की महाकाव्यात्मकता की सिध्दी में औपन्यासिक शैली बाधक नहीं होती, वरन् महाकाव्य के शैलीगत गुणों के आरोपण से उपन्यास ` उपन्यास ` की संज्ञा से शून्य हो सकता है। उसकी महत् उद्देश्य के अनुरुप गांभीर्य तथा औदात्य की अपेक्षा की जाती है परंतु महाकाव्य के शैलीगत गांभीर्य औदात्य से वह भिन्न होती है।" [१]

संवादो की योजना सर्वत्र पात्रों की मन:स्थितीयों के अनुसार हुई है। एक ही पात्र परिस्थिति परिवर्तन के साथ अलग अलग ढंग से वार्तालाप करता हुआ दिखाई देता हैं। कहीं बोलचाल की भाषा में तो कहीं गंभीर दार्शनिक शैली में। संवाद संक्षिप्त और सरल भी है, परंतु जहाँ पात्रों के माध्यम से लेखक ने अपने आदर्शों की व्याख्या की है, वहाँ संवाद लम्बे और बोझिल बन गये हैं। ऐसे स्थानोंपर

---

१ डॉ.सुषमा प्रियदर्शिनी - हिन्दी उपन्यास - पृ.१०३।

अति विस्तारता एवं दीर्घता के कारण नीरसता आई है। सज्जन,वनकन्या , महिपाल, बाबारामजी आदि पात्रों के कुछ वक्तव्य लेखक के आदर्शों की व्याख्या करते हैं। अत: इनके संवाद लेखक की उद्देश्य पूर्ति के लिये विस्तृत बन गये हैं। इसके रहते हुए भी संवाद कथा-विकास में सहायक-चरित्र प्रकाशक हैं। वे मनोविज्ञान होने के साथ-साथ नाटकीय भी हैं। जैसे --

" महिपाल - मेरे हाथ में दो दिन के लिए शासन आ जाये। तो ये जितने धर्म की बात करनेवाले हैं सबको चौराहोंपर जूतों से पिटवाऊँ। ढोंगी मक्कार।

सज्जन हँसा बोला -- " होगा-होगा जाने दो उस्ताद। आखिर इन धर्मवालोंने तुम्हारा क्या बिगाडा है ? "

महिपाल बोला --" इनकी अंधी कट्टरता पूरी जिंदगी को निहायत ही गैर इंसानी नजर से देखती है।" २

इस संवाद में महिपाल का धर्म-विषयक दृष्टिकोण प्रकट होता है और उसकी प्रगतिशीलता भी व्यक्त होती है।

उपन्यास की सफलता का एक आयाम उसकी भाषा है। पात्रों के विविधता के साथ भाषा के अनेक रुपों का प्रयोग करके लेखक ने उपन्यास में रोचकता निर्माण की है। पात्रों के अनुसार भाषा का रुप भी बदलता है। शिक्षित वर्ग के लोग अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग करते हैं। सज्जन,वनकन्या,महिपाल आदि शिक्षित पात्रों की भाषा खडीबोली है,उसमें नागरिकता का फूट ,परिष्कार है। अशिक्षित पात्रों की भाषा में बोलचाल की यथार्थ भाषा का प्रयोग हुआ है। इसमें पात्र के सामाजिक स्तर के अनुकूल प्रत्येक पात्र की भाषा भिन्न है।

ताई, नंदो, बाबारामजी तथा अन्य सारे पात्रों की भाषा बोलचाल की है, जो लखनऊ की आंचलिकता की पुट लिये हुए है। इसे `लखनवी` भाषा भी कहा जा सकता है। ताई की भाषा का नमूना --

---

२ अमृतलाल नागर - `बूँद और समुद्र` - पृ.१९५।

" मेरे कन्नोमल का पोना लाखोपति हैगा । इनके यहाँ तीन पिढीयों से विलायत आवें हैं, तू समझाती क्या है ? ला पान दे ।" [३]

तथा " अरे तेरे ही आगे अगाडी आवैगी खसौही सबको झूठ बनाती फिरे लैगो । सास मेरी को दुख भी दे और बदनाम भी करे ।" [४]

ताई का अंत भी नाटकीय स्थिति में हुआ है । रुग्णावस्था में वे अपने पति को मारने के लिये मारणतंत्र सिध्द कर मूठ भी चलाती हैं किन्तु यहीं फिर वहीं विरोधाभास साथ-साथ प्रकट होता है, वे मन्त्र को अपने ऊपर ले लेती हैं --

" अब मरन किनारे किसी का बुरा न चलूँगी ।" [५]

इस कथन में भारतीय नारी का सहज संस्कार चरितार्थ हो गया है । डॉ.शर्मा के अनुसार --

" निश्चय ही यह चित्र झाक कर अमृतलाल नागर ने हिन्दी उपन्यास को उच्चतम स्तर तक उठाया है ।" [६]

समग्रत: ताई का चरित्र गतिशील और गहरे मनोवैज्ञानिक ताने-बानों से बुना गया है ।

महिपाल की परिवार की भाषा गँवई बोली है । महिपाल घर में उसी बोली का प्रयोग करता है और बाहर शिक्षित वर्ग की परिष्कृत भाषा का । कल्याणी का कथन है --

" आँखों, हम पंच घरगिरस्तीवाले बाला बच्चेदार हुई । तुमका धरम भगवान का अहसि न कहे का चाहि । बडा पाप लगति होय ।" [७]

---

३ अमृतलाल नागर - बूँद और समुद्र - पृ.३२८ ।

४ - वही - ,, पृ.१०५ ।

५ - वही - ,, पृ.५६३ ।

६ डॉ.रामविलास शर्मा - आस्था और सौन्दर्य - पृ.१३६ ।

७ अमृतलाल नागर -' बूँद और समुद्र ' - पृ.१६० ।

शैलीयों की दृष्टी से नागर जी ने प्राय: इन पध्दतियों का उपयोग किया है --

१) वर्णनात्मक शैली
२) नाटकीय शैली
३) मनोविश्लेषणात्मक
४) समीक्षात्मक शैली
५) फ्लैश बैक शैली
६) भावात्मक शैली
७) प्रतिकात्मक पध्दति ।

१) वर्णनात्मक शैली --

प्रसंगों की इतिवृत्तात्मकता में और वातावरण सर्जना में इस शैली का सुन्दर प्रयोग किया जाता है । प्रेमचंद परंपरा के सभी उपन्यासकारोंने इस शैली का उपयोग किया है । वर्णनात्मकता के द्वारा वस्तुओं,घटनाओं,स्थानों,पात्रों की विशेषताओं को साकार किया जाता है ।

२) नाटकीय शैली --

रचना को कौतुहल और गतिप्रदान के लिये इस पध्दति का प्रयोग किया जाता है । पात्र ही संवादों के सहारे कथा को विकास देते हैं और कथाकार परोक्ष रुप से ही अपना मन्तव्य स्पष्ट कर देता है ।

३) मनोविश्लेषणात्मक शैली --

पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व और चरित्रांकन के लिये उनके मनोभावों का चित्रण मनोविश्लेषण द्वारा स्पष्ट किया जाता है ।

४) फ्लैश बैक शैली --

वर्तमान अनुभवों में अतीत प्रसंगो का स्मरण करके अनुभूतियों को श्रृंखलाबध्द करने में इसी पध्दती का प्रयोग किया जाता है कथा को मनचाहा आकार देकर अतीत की ओर मुड जाना कथा को गति एवं व्यापकता देता है ।

५) समीक्षात्मक शैली -

साहित्यकार का चिंतन सामाजिक समस्याओ, राजनैतिक,अर्थिक, ऐतिहासिक आदि पहलुओं का खण्डन मण्डन इस शैली में किया जाता है ।

६) भावात्मक पध्दती --

इस पध्दती में रोमानी वातावरण में अथवा भावों के अच्छ्वास के समय स्वत: ही भावना आकुल और उद्भ्रान्त हो उठती है । भावों के स्पंदन तथा सजीवता के लिये कला काव्यरुप में निखरती है ।

७) प्रतीकात्मक पध्दती --

विश्लेषणात्मक शिल्पविधि के साथ-साथ मानव के अन्तर्तम के गूढ रहस्यों की अभिव्यक्ति को परोक्षा व्यंजना में प्रकट करने के लिये प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है ।

वर्णनात्मक शैली भाषा,सरल,स्वाभाविक ,अलंकृत और चिंतनप्रधान है । वस्तुत: नागर जी भाषा के जादूगर है । डॉ.रामविलास शर्मा ने इस उपन्यास की भाषा के संबंध में कहा है ---

" अमृतलाल नागर द्वारा किया हुआ एक मुहल्ले का यह ` लिंग्विस्टिक सर्वे ` भाषा विज्ञान की सामग्री का अद्भूत पिटारा है, अभितक किसी देशी-विदेशी भाषा में एक नगर की बोलियों का निदर्शन करनेवाला ऐसा उपन्यास मेरे देखने में नहीं आया इन शैलीयों में भाषा और समाज का इतिहास बोलता है ।" ८

आलोचकोंने भाषा की प्रशंसा की है लिखा है --

" बोलचाल के लहजे,भाषा के लटके स्थानीय बोलियाँ,पात्रों के मानसिक उतार-चढाव,पात्रों की भाव-भंगिमा ,परिस्थितियों की नाटकीयता जितने सुन्दर ढंग से नागर जी ने दी है देशकाल ,वातावरण,पात्र,मनोवृत्ती सभी रुपों में

---

८ डॉ.रामविलास शर्मा - ` आस्था की समस्या आलोचना - पृ.२३ ।

कथाकथन की भाषा जितनी समर्थ नागर जी की है, शायद ही सफलता की इस ऊँचाई को हिन्दी के किसी अन्य कथाकारने छुआ हो । [९]

नागर जी इस उपन्यास में मनोविश्लेषणात्मक पध्दती का प्रयोग किया है । जैसे ' बूँद और समुद्र ' की वनकन्या का निम्न उध्दहरण उसकी मनोदशा का सुन्दर चित्र है ।

' वह इस समय ठगी सी अनुभव कर रही थी, थकान अनुभव कर रही थी, हार अनुभव कर रही थी । उसे ऐसा लग रहा था कि उसका जीवन अपने तमाम रंगों को लेकर अब खुल चुका है । वे रंग अब फीके पड चुके थे । जीवन में नया कुछ भी न आयेगा - जो कुछ भी आयेगा, वह अभाग्य की पुनरावृत्ति ही होगी ।' [१०]

समीक्षात्मक पध्दती -

महिपाल की समीक्षात्मक ज्ञान प्रवृत्ती का प्रचुरता पग-पग पर सांस्कृतिक, वैचारिक उध्दरणों से मंडित है ।

प्रतीकात्मक पध्दती --

नागर जी का ' बूँद और समुद्र ' प्रतीकात्मक शिल्प-विधि का उपन्यास है । उपन्यास का प्रत्येक पात्र यह सिध्द करने की चेष्टा करता है कि समुद्र में प्रत्येक बूँद का स्वतंत्र महत्व है । एक बूँद भी व्यर्थ क्यों जाये । डॉ.प्रेम भटनागर के अनुसार --

' जीवन सागर में डूबकी लेने वाले कथाकारने महिपाल, कर्नल, सज्जन, वनकन्या, ताई, कल्याणी, जैसी महत्वपूर्ण बूँदे रत्न जूटाए हैं । इसमें भारतीय समाज की नागरिक वर्ग का जीवन जैसा लिया गया ( ) प्रतीकात्मक के रुप में प्रस्तुत किया गया है ।' [११]

---

९ आनंद त्रिपाठी ' अमृतलाल नागर के उपन्यास ' - पृ.९५ ।

१० अमृतलाल नागर - ' बूँद और समुद्र ' - पृ.३६७ ।

११ डॉ.प्रेम भटनागर - ' हिन्दी उपन्यास शिल्प - ' - पृ.९५ ।

इस प्रकार नागर जी ने मनोविश्लेषणात्मक समीक्षात्मक और प्रतीकात्मक इन तीन शैलीयों का प्रयोग किया है। इनमें से प्रतीकात्मक शैली प्रभावो बन पढो है।

निष्कर्ष --

नागर जी ने भाषा का प्रयोग साधिकार किया है। भाषा में जितनी विविधता और रोचकता है, शायद ही दूसरें किसी हिन्दी के उपन्यास में मिले। भाषा प्रसाद गुण से संपन्न है। पर उसमें वक्रता, अर्थ भंगिमा और अभिव्यक्ति की पूर्ण क्षामता विद्यमान है। भाषा कहीं व्यंग्य-पूर्ण और चुटीली कहीं चित्रमयी और बिंबमयी कहीं अलंकृत और काव्यात्मक कहीं अंग्रेजो, उर्दू, मिश्रित और कहीं मुहल्लें की बोलचाल की है।

शैली की दृष्टी से प्रधान तथा वर्णनात्मक शैलो को आधार बनाकर कथा विकास चरित्रों, का उद्घाटन वातावरण निर्मितो की है। संवाद शैली में पात्रों का विभिन्न मनोवृत्तियों का चित्रण हुआ है। `किस्सागो नागर जी की शैली का महत्वपूर्ण गुण है, जो प्रस्तुत उपन्यास में देखा जा सकता है। समग्रत: `बूँद और समुद्र` की सफलता का रहस्य उसके संवादों तथा भाषा शैली में है। भाषा इतने विविध रुपों में और यथार्थ रुप में व्यक्त हुई है कि पाठक चमत्कृत हुए बिना रह नहीं सकता।